अध्याय–11

वन अनुसंधान केन्द्र
हैदराबाद

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के वन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद ने काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर के प्रशासनिक नियंत्रण में जुलाई, 1997 से कार्य करना शुरू किया। इस केन्द्र को वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में सभी पहलुओं पर आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और गोवा राज्यों के दक्षिणी शुष्क पर्णपाती पारितंत्र की अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित किया गया।

वर्ष 2002–2003 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं
कोई नहीं

वर्ष 2002–2003 के दौरान जारी परियोजनाएं
कोई नहीं

वर्ष 2002–2003 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : आन्ध्र प्रदेश के अर्ध–शुष्क उष्णकटिबंधी में विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों का प्रदर्शन (एफ आर सी–01 / ए एफ–01 / 2001–2006)। प्रधान अन्वेषक – डॉ. जी.आर.एस. रेड्डी।

स्थिति : अन्तःसंरचना यथा–160 वर्ग मी. शेड हाउस (पौधशाला) और ड्रिप सिंचाई प्रणाली के साथ एक हैक्टेयर कायिक गुणन उद्यान तथा आठ एकड़ कृषिवानिकी परीक्षण परिसर को तैयार करने का कार्य पूरा किया गया। चन्दन, रोजवुड, यूकेलिप्टस और सागौन के सर्वोत्तम जननदृव्य में से एक के लिए परीक्षण घरों को तैयार करने का कार्य पूरा किया। पात्र संवर्धन प्रयोग शुरू किए गए हैं।

परियोजना 2 : आन्ध्र प्रदेश में वनों के पुनर्जनन पर वनाग्नि के प्रभाव का मूल्यांकन (एफ आर सी–02 / ई बी–01 / 2002–2005)। प्रधान अन्वेषक – डॉ. व्हाई श्रीधर।

स्थिति : इस परियोजना के तहत नमूना लेने की तकनीक सहित कार्यपद्धतियां तैयार की गई तथा इन अध्ययनों को करने के लिए स्थलों की पहचान भी की गई। ऐसे स्थलों में प्राकृतिक पुनर्जनन पर आग के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए स्थायी क्वाड्रेट तैयार किए जाएंगे, जहां प्रबन्ध उपाय बनाम प्राकृतिक आग क्षेत्र के रूप से आग का उपयोग किया जाता है।

परियोजना 3 : आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक के खान ढेरों का सुधार (एफ आर सी–03/ई बी–02/2002–2005)। प्रधान अन्वेषक – डॉ. ए. पोनमबालम।

स्थिति : इस परियोजना के तहत की गई प्रगति में मेडक और बिल्लारी जिलों के तन्दुर और सन्दुर क्षेत्रों में क्षेत्र भ्रमण और खान ढेर क्षेत्रों के चयन और पात्र संवर्धन प्रयोगों का सूत्रपात करना शामिल है। क्षेत्र में सम्बन्धित उद्योग के साथ परामर्श करके क्षेत्र परीक्षण करने के लिए कार्यपद्धति तैयार की गई।

बाहर से सहायता–प्राप्त परियोजनाएं

कोई नहीं

अनुसंधान उपलब्धियां

वर्ष 2002–2003 के दौरान आन्ध्र प्रदेश की एक परियोजना पूरी की गई और तीन परियोजनाएं शुरू की गई।

शिक्षा और प्रशिक्षण

- श्री मुरलीधर राव, वन संरक्षक ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी में 12–25 जून, 2002 तक 'उन्नत वन प्रबंध पाठ्यक्रम' में दो सप्ताह का प्रशिक्षण लिया।

प्रकाशन

- 'इवेलूएशन ऑफ परफॉर्मेन्स ऑफ सीडलिंग्स रेज्ड थ्रो डिफरेन्ट नर्सरी टैक्निक्स ऑफ डैल्बर्जिया लेटिफोलिया लिन. सेन्टेलम एलबम लिन. और राइटिया टिंक्टोरिया आर. ब्री 'पर परियोजना रिपोर्ट

सम्मेलन/कार्यशालाएं/संगोष्ठी/सेमीनार

- श्री मुरलीधर राव, ने कर्नाटक सोप्स एंड डीटर्जेन्ट्स लि.; तथा फलेवर्स एंड फ्रेगरेन्सेज एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में आयोजित (मई, 2002) 'अधिक चन्दन उगाओ' पर कार्यशाला में भाग लिया।

परामर्श

- वन अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक और कर्मचारी रूपये 18.5 लाख की निम्न दो परामर्शी परियोजनाओं में शामिल हैं :

1. आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम के लिए तिरूपति से तिरूमाला तक रोप वे का पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन परियोजना (अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत की जा रही है)।
2. भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद दल के सहयोग से रिलायन्स पेट्रोलियम लि. के लिए कृष्णा बेसिन में तेल खोज के लिए भूकम्पीय सर्वेक्षण का पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन। (अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है)।

सहानुबंध और सहयोग

- राष्ट्रीय सुदूर संवेदी एजेन्सी, हैदराबाद, यूनानी दवा के लिए केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद, राज्य औषधीय एवं सुरभित पादप बोर्ड, हैदराबाद के साथ सहानुबंध विकसित किए गए।

महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् हैदराबाद में आन्ध्र प्रदेश राज्य वन विभाग के साथ सम्पर्क बैठक करते हुए।